शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2013

# हिंदी दलित आत्मकथाओं में दलित संवेदना

कु. योगिता रावते (शोधार्थी), हिंदी विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

## शोध संक्षेप

*साहित्य में आत्मकथा लेखन बहुत पुरानी विधा है । इसी तरह, दलित साहित्य का इतिहास भी अत्यंत पुराना है । 'दलित' शब्द के अंतर्गत दबाए गए शोषित, पीडित जनों की जीवन कहानी उतनी ही पुरानी है, जितनी भारतीय हिंदू संस्कृति है । सैकड़ों वर्षों से दलित वर्ग गुलामी भरा जीवन व्यतीत कर रहा था। जिनका जीवन पशुओं से भी गया गुजरा था । ऐसे दलितों ने जब आपबीती को आत्मकथा में उजागर किया तब समाज को उनकी सच्चाई का पत्र चला। प्रस्तुत शोध पत्र में दलित आत्मकथा में दलित संवेदना की पड़ताल की गयी है।*

## प्रस्तावना

उच्च वर्गीय समाज ने दलित समुदाय को गांव के बाहर रहने के लिए मजबूर किया। दलितों का काम केवल उच्च कहे जाने वाले तीनों वर्णों की सेवा करना तथा आदेशों का पालन करना था । दलितों की उच्च शिक्षा प्राप्ति पर प्रतिबंध, धन संग्रह करने पर रूकावट, अच्छे वस्त्र पहनने पर रोक लगे । उनका छुआ खाना -पीना दूर उनकी परछाई से भी परहेज किया गया । ऐसी दीन-हीन अवस्था में सैकड़ों वर्ष दलित समाज ने बिताये किंतु दलित वर्ग की ओर किसी का ध्यान नहीं गया । ऐसे में महात्मा ज्योतिबा फूले डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था पर प्रहार किया गया जिससे दलित समाज में परिवर्तन आया ।

भारतीय साहित्य में पहली बार मराठी में दलित साहित्य लिखा गया। दलित साहित्य आंदोलन 1960 के आस-पास मराठी भाषा में आरंभ हुआ और 1970 तक मराठी भाषा के साहित्य में उसने केंद्रीय महत्व प्राप्त कर लिया । तत्पश्चात अनुवाद के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रदेशों में दलितों ने लिखना प्रारंभ किया। आज दलित साहित्य विभिन्न विधाओं में हमारे समक्ष है - कविता, कहानी, उपन्यास और आत्मकथा । दलित आत्मकथाएं सबसे सशक्त विधा के रूप में सामने आई है । दलित साहित्य की मुख्य विधा आत्मकथा ही रही जो भोगे हुए अनुभव पर आधारित होती है ।

## दलित आत्मकथा में दलित संवेदना

दलित आत्मकथाओं में दलित समुदाय के शोषण, अपमान, अवहेलना, तिरस्कार लिखकर पूरे समाज को यह बता दिया कि हमारा जीवन जानने के लिए किसी रची हुई कहानी या आख्यान की नहीं, स्वयं हमारे जीवन को देखना जरूरी है । जो प्रमुख आत्मकथाएं हिंदी दलित साहित्य में है, उनमें ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन' मोहनदास नैमिशराय की 'अपने-अपने पिंजरे, सूरजपाल चौहान की 'तिरस्कृत', माता प्रसाद की 'झोपड़ी से राजभवन', 'कौशल्या बेसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' आदि मुख्य हैं । ये आत्मकथाएं वेदना के गर्भ से जन्मी और पारंपरिक, सामाजिक संरचनाओं को अस्वीकार करती है । इन आत्मकथाओं के माध्यम से लेखकों ने समाज व्यवस्थाओं को झकझोर कर रख दिया है । आत्मकथाएं दलित

लेखकों के अदम्य जीवन संघर्ष के साथ आगे बढ़ने का संदेश देती हंै क्योंकि दलित आत्मकथाकार बताना चाहते है कि जो नारकीय और दासतापूर्ण जीवन हमें मिला, उसमें व्यक्ति विशेष का अपराध नहीं है । दलित आत्मकथा व्यवस्था परिवर्तन की मांग भी करती है । इन आत्मकथाओं में लेखक ने स्वयं भोगे हुए परिवेश का यथार्थ अंकन किया है । आत्मकथाओं में निहित मूल संवेदनाओं का पक्ष इतना प्रबल है कि दलित वर्ग के जीवन की वास्तविकता आइने के समान साफ हो जाती है । आत्मकथाओं मेंे निहित संवेदनाओं को जानने के लिए सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक संदर्भ का विभाजन आवश्यक हो जाता है ।

सामाजिक संदर्भ -

दलित लेखकों द्वारा लिखी गई आत्मकथाएं दलित समाज की जिंदगी और उनकी समस्याओं के माध्यम से ऐसे समाज से परिचय कराती है कि हम उस वास्तविकता से अनभिज्ञ रहते है । ब्राम्हणवादी वर्ण व्यवस्था का गहरा प्रभाव एवं शोषण का भयावह रूप समाज पर दिखाई देता है ।

हिंदी के प्रतिष्ठित दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने 'जूठन' आत्मकथा में बरला गांव के दलित वर्ग के व्यक्तियों पर त्यागियों, जमींदारों से होने वाले अत्याचार का यथार्थ अंकन हुआ है । दलित तगाओं के घरों में मेहनत मजदूरी करते थे उसके बदले में उन्हें गालियां देकर अपमानित किया जाता था । जूठन में हर आदमी लेखक से पूछते है कि -"तू कुण जात का है । अब चूहड़े के, दूर हट, बदबू आ रही हैं ।"1 "अस्पृश्यता का ऐसा माहौल कि कुत्ते - बिल्ली, गाय-भैंस को छूना बुरा नहीं था लेकिन यदि चूहड़े का स्पर्श हो जाए तो पाप लग जाता था । सामाजिक स्तर पर इंसानी दर्जा नहीं था ।"2 चूहड़े जाति के कारण कुलकर्णी की बेटी सविता वाल्मीकि के प्रेम से मुंह मोड़ लेती है यह जानकर कि वाल्मीकि की जाति निम्न (चूहड़ा) है । मोहनदास नैमिशराय की 'अपने-अपने पिंजरे' में मेरठ जिले के चमारों की स्थिति और उनके जीवन को अंकित किया है । हिन्दू समाज में आदमी की कीमत उसकी जाति से आंकी जाती थी । दलित वर्ग के लोग जिस स्कूल में पढ़ाई करते थे उसे चमारों का स्कूल कहा जाता था जैसे - "चमारों का कुआं, चमारों का नीम, चमारों की गली, चमारों की पंचायत आदि - आदि ।"3 भारतीय जातिग्रस्त समाज में हर एक को सबसे पहले व्यक्ति की जाति के बारे में जानने की जिज्ञासा रहती है । एक बार लेखक अपने भाई के साथ बहन के घर जा रहे थे, प्यास लगने पर सवर्ण के घर से पानी मांगते तो वे सबसे पहले उनकी जाति पूछते है दलित मालूम होते ही कहते हैं - "तो म्हारे घर अग्गे कियों खड़े हो ? जाओ सिद्धे - सिद्धे, आगे चमारों के ही घर पड़ेंगे पैले ।" "म्हारे घर चमारों की खात्तर पानी ना है ।"4 इस प्रकार ब्राम्हणवादी व्यवस्था का यथार्थ अंकन हुआ है । सूरजपाल चौहान ने तिरस्कृत आत्मकथा में ब्राम्हणवाद के उत्पीड़न के साथ-साथ अपने परिवार, रिश्तेदारी तथा दलित समाज को मिली मानसिक पीड़ा और तिरस्कार को उद्घाटित किया है । इस आत्मकथा द्वारा जाति का बीज कितना गहरा एवं भयानक होता है , इसका स्पष्ट रूप मिलता है । सूरजपाल चौहान अपने गांव जा रहे थे तो प्यास लगी कुंए से पानी निकालकर पीने लगे तो जमींदार दांत पीसता हुआ बोला - "अरे भंगनिया, नेक पीछे कू

हट के पानी पी, यह शहर ना है गांव है, मारे लठिया के कमर तोड़ दई जाएगी ।" इस प्रकार सूरजपाल चैहान को हर जगह सवर्णों के व्यवहार को झेलना पड़ा उन्होंने भंगी होने का दर्द महसूस किया उसे जिया है ।

शैक्षणिक संदर्भ -

दलितों में जागृति का संचार पैदा करने वाले मानवतावादी डा अम्बेडकर के आंदोलन ने पूरे भारत में दलितों को झकझोर कर एक नयी चेतना जागृत की । अम्बेडकर जी के प्रभाव के कारण दलित शिक्षा के प्रति आकृष्ट हुए और समाज में अपनी दयनीय दशा से ऊपर उठने का एक ही प्रमुख अस्त्र शिक्षा को मान लिया था । निश्चित रूप से दलित आंदोलन ने दलितों को समाज में दलित बनाने वाले मूल कारणों वर्ण, जाति एवं मनेवादी सोच को चिन्हित किया तथा उस पर लगातार प्रहार करने का प्रयास किया । 'जूठन' आत्मकथा में वाल्मीकि जी ने अपनी आत्मकथा का आरंभ प्राथमिक विद्यालय में पढ़ रहे खुद एक अछूत बालक के साथ उसके सवर्ण गुरू के अनुदार व्यवहार के प्रकटीकरण से किया है । ओमप्रकाश जी को हेडमास्टर ने खानदानी काम का जिक्र कराते हुए कहा था - "ठीक है.....वह जो सामने शीशम का पेड़ खड़ा है, उस पर चढ़ जा और टहनियाँ तोड़के झाड़ू बणा ले । पत्तों वाली झाड़ू बणाना । और पूरे स्कूल कू ऐसा चमका दे जैसा सीसा । तेरा तो यो खानदानी काम है । जा....फटाफट लग जा काम पे ।" ओमप्रकाश जी को विद्यार्थी जीवन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा किंतु ओमप्रकाश जी सवर्णों द्वारा बनाई गई व्यवस्था को बदलने के लिए संघर्ष करते है । उन्होंने डा अम्बेडकर के जीवन संघर्ष को जानने के पश्चात वे नयी दिशा की ओर अग्रसर हुए । सवर्णों द्वारा बनाई गई व्यवस्था दलितों के लिए नरक निर्माण करती है । 'अपने-अपने पिंजरे' आत्मकथा में पी.टी.इंस्ट्क्टर शिवकुमार शर्मा लेखक और दलित साथियों से कहते है - "अब तुम से पढ़ने के लिए कौन कहता है ? बस जूते - चप्पल बनाओं और आराम से रहो । चले आते है ससुर न जाने कहां - कहां से ।" इस प्रकार सवर्ण शिक्षक कोई न कोई बाधा खड़ा कर देते । गांव के स्कूल को चमारों का स्कूल कहा जाता । शिक्षक दलित छात्रों के प्रति ऐसा माहौल बना देते है कि पढ़ाई समाप्त होने से पहले ही छोड़ दे । दलितों के आरक्षण को लेकर सवर्ण हेडमास्टर के शब्दों में -"अरे भाई इसमें इनकी गलती थोड़ा ही है । आरक्षण देकर दिमाग खराब किया है । अब ये तो सरकारी दामाद है ।" सूरजपाल चौहान की आत्मकथा तिरस्कृत में शिक्षा को पाने में आई बाधाओं पर भी लिखा है । संस्कृत विषय के अध्यापक सवर्ण होने के कारण दलित छात्रों से तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करते है । अध्यापक सूरजपाल जी को जाति का अहसास दिलाते है और अपने साथी अध्यापकों को उन्हें संकेत कर कहते है - "यदि देश के सारे चूहडे चमार पढ़-लिख गये तो गली मोहल्ले की सफाई और जूते बनाने का काम कौन करेगा ?" इस प्रकार सवर्ण अध्यापक दलितों को सफाई करने और जूते बनाने के लिए अनपढ़ रखना चाहते है । जाति की इस संकीर्ण सोच के कारण दलितों के साथ घृणित व्यवहार करते है । भेदभाव की नीति के कारण दलित बच्चों को सवर्ण बच्चों से दूर पीपल के पेड़ के नीचे बिठा देते थे । अध्यापकों के घृणित व्यवहार को सहन करते हुए सूरजपाल जी ने बी.ए. तक की शिक्षा

प्राप्त की और नारकीय जीवन से मुक्ति पा ली ।

आर्थिक संदर्भ -

दलितों को निरंतर आर्थिक संघर्ष से गुजरना पड़ता है । 'जूठन' आत्मकथायें आर्थिक कष्टों का अत्यंत सजीव चित्रण है । ओमप्रकाश जी के परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी वाल्मीकि जी की मां तगाओं के घरों में साफ-सफाई का काम करती थी । मां के साथ बहन, भाभी तथा भाई काम करते थे । प्रत्येक तगाओं के घर में दस से पन्द्रह मवेशी होते थे मवेशियों का गोबर उठाकर गांव के बाहर उपले बनाने का काम वाल्मीकि जी के परिवार के लोग करते थे । कठिन मेहनत के बाद भी मजदूरी के नाम पर थोड़ा अनाज, दोपहर की बची खुची रोटी, कभी कभी टोकरी में 'जूठन' भी डाल दिया जाता । वाल्मीकि जी ने बचपन में घटित घटनाओं का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया । सवर्णों के शोषण व अत्याचार से दलित वर्ग के लोगों को अपमानित होकर जीवन जीना पड़ा। इस अमानवीय व्यवस्था पर आक्रोश प्रकट करते हुए लेखक ने लिखा है -"अपने श्रम के मूल्य मांगना अपराध क्यों हैं ?" 'अपने-अपने पिंजरे' में लेखक ने समाज में सवर्णों द्वारा दलितों के आर्थिक शोषण का यथार्थ चित्रण अंकित किया है । दलितों द्वारा मेहनत से बनाई गई वस्तुओं मंे कोई न कोई दोष निकालते है और दाम नहीं देते । दलितों द्वारा किये गये, परिश्रम से दूसरे ही लखपति बनते है । इस प्रकार आर्थिक दशा का चित्रण मिलता है । 'तिरस्कृत' आत्मकथा में सूरजपाल चौहान ने दलितों की आर्थिक दशा का बड़ा फलक सामने रखा है । आर्थिक मजबूरी दलितों को गुलाम बनाती रही । परिवार की आर्थिक स्थिति के कारण सूरजपाल जी स्वयं अपनी मां के साथ जूठन उठाने जाते । अपने ही गांव के सवर्ण राधे लोधे की लड़की के विवाह संदर्भ का उदाहरण देते हुए लेखक लिखते है -"मैं खाना खाते बारातियों को टुकुर -टुकुर देख रहा था। मेरे मुंह से जैसे लार टपकने वाली थी । मैं रह -रहकर मां की ओर देखता और मां बिना कुछ कहें मेरे सिर पर हाथ फेरे जा रही थी । दलितों की स्थिति कुत्ते - बिल्ली से भी गई गुजरी थी । लेखक ने आर्थिक स्थिति का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है । दलित आत्मकथाएं दलित संघर्ष की सार्थकता को रेखांकित करती है । लेखकों द्वारा भोगी हुई पीड़ा का सत्य इतना कटु होता है कि पाठक निरंतर सोच में पड़ जाता है । लेखक का व्यक्तित्व अपने संदर्भ में अपने अंदाज, अपनी शैली, अपनी भाषा में पूरी समाज को पाठक वर्ग के सामने रू - ब - रू खड़ा कर देता हैं जिसमें पूरी व्यवस्था और उसका इतिहास भी झांकता है और आज के परिवेश में भविष्य की आकांक्षा भी जन्म लेती है । पाठक निरंतर सोच में पड़ जाता है वह बार-बार सोचता है कि समाज ऐसा क्यों है ? तभी आत्मकथाएं सार्थकता को पार कर जाती है । डाॅ. अम्बेडकर ने समाज में शिक्षा की लहर पैदा की शिक्षित बनो, संघर्ष करो तथा संगठित हो के नारे से सभी दलित वर्ग के लोग जागरूक हो रहे थे और अम्बेडकर के सपने को साकार बना दिया ।

निष्कर्ष

कह सकते है कि ये आत्मकथाएं दलितों के लिए मात्र सीमित नहीं है, अपितु पिछड़ी हुई जितनी भी जातियां है उनके लिये लड़ने का साहस भी देती है । साथ-साथ अपने जीवन को सुंदर बनाने का संदेश भी देती है । इसलिए ये आत्मकथाएं

भारतीय इतिहास का दस्तावेज भी है ।

सुझाव -

1. शिक्षा के प्रति जागृत होकर नयी चेतना जागृत करना ।
2. अपने अधिकारों के प्रति सचेत होना ।
3. संगठित होकर समाज हित में कार्य करना ।
4. डा अम्बेडकर के इतिहास को जानना ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि , जूठन
2. मोहनदास नैमिशराय, अपने-अपने पिंजरे
3. सूरजपाल चौहान, तिरस्कृत